सफलता की चाह में भटकने वाली
वर्तमान प्रजा को सफलता की वास्तविक
राह बताने वाली अद्‌भुत पुस्तक

Secret of Success

सफलता का रहस्य

:: लेखक ::

हीर

मुख्य प्राप्तिस्थान
नवभारत साहित्य मंदिर
जैन देरासर के पास,
गांधी रोड, अहमदाबाद-१
फोन : (०७९) २२१३९२५३
२२१२२९२१

२०२, पेलिकन हाउस,
आश्रम रोड, अहमदाबाद-९
फोन : (०७९) २६५८३७८७
२६५८०३६५

E-mail : info@navbharatonline.com
Web : www.navbharatonline.com
fb.com/NavbharatSahityaMandir

TOYCRA
play to grow
दूसरी मंजिल,
इन्द्रप्रस्थ कॉर्पोरेट हाउस,
शेल पेट्रोल पंप के सामने,
विनस एटलान्टिस के सामने,
१०० फूट प्रह्लादनगर गार्डन रोड,
अहमदाबाद
फोन : (०७९) ६६१७०२६५
मो. ९८७९१ १०६५०

SECRET OF SUCCESS
by Hir
Navsarjan Publication, Ahmedabad
2017

© प्रकाशक

आवृत्ति प्रथम : वि.सं. २०७२
इ.स. २०१७

नकल : ५०००

₹ ३५.००

प्रकाशक
जयेन्द्र पी. शाह
नवसर्जन पब्लिकेशन
२०२, पेलिकन हाउस, गुजरात चेम्बर्स ऑफ कोमर्स के कंपाउन्ड में,
आश्रम रोड, अहमदाबाद : ३८० ००९
फोन : (०७९) २६५८०३६५

टाइप सेटिंग
क्रियेटिव प्रकाशन
राजकोट

मुद्रक
यश प्रिन्टर्स
अहमदाबाद

SECRET OF SUCCESS

विश्व विख्यात बनने की कला

❖ नरेन्द्र मोदी, सचिन तेंदुलकर, लता मंगेशकर, बिल गेट्स, A. R. रहमान आदि अपने-अपने क्षेत्र में वर्तमान में जो भी टॉपर्स है वे सब स्कूल-कॉलेज के समय में रेंकर ही थे, ऐसा नियम नहीं है। Topper बनने के लिये एक ही क्षेत्र में 10-15 वर्ष तक कड़ी मेहनत करनी पड़ती है । वर्तमान स्कूल-कॉलेजों की मैकॉले शिक्षण पद्धति के अंदर व्यक्ति की शक्ति 15-20 क्षेत्रों में विभाजित हो जाती हैं । व्यक्ति को अगर विश्वविख्यात बनना हो तो किसी एक-आध क्षेत्र में ही उसे

आगे बढ़ना चाहिये । वर्तमान में स्पेश्यलाईजेशन का जमाना है । M.B.B.S. तथा हार्ट स्पेश्यलिस्ट इन दोनो की कमाई में रात-दिन का अंतर प्रत्यक्ष दिख रहा है । इसलिये व्यक्ति को अगर शिखर पर पहुँचना हो तो जिसमें जैसी योग्यता-रुचि आदि हो उस अनुसार शुरूआत से उसे एक ही क्षेत्र में इतना आगे बढ़ना चाहिये ताकि वह खुद के क्षेत्र में पूरे विश्व में नंबर 1 बन जाए । सिर्फ स्कूली शिक्षा को ही सर्वस्व मानने वाले प्रायः कभी भी विश्वस्तर पर नहीं पहुँच सकते । लक्ष्य पुर्वक निरंतर परिश्रम किया जाय तो ही सफलता प्राप्त होती है ।

कभी बेरोजगार ना बनना हो तो...

❖ अपने पूर्वज एक विषय में विशेषज्ञ बनने के साथ-साथ अर्थोपार्जन करने के अन्य कार्यों को करने की भी कुशलता हासिल करते थे, ताकि कभी किसी क्षेत्र में काम न मिले तो दूसरे कार्य करके भी खुद का गुजारा किया जा सके । इसलिये ही भूतकाल में विद्यार्थीओं को 72 कलाओं का ज्ञान दिया जाता था । जबकि वर्तमान में स्कूलों के अंदर जीवन में अनुपयोगी विषयों की रटण विद्या एवं मात्र परीक्षा में पास होने की कला सिखाई जाती है । जिसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति को जब इंजिनियरिंग - M.B.A. आदि खुद के विषय का काम नहीं मिलता तब पेट की आग बुझाने हेतु वह या तो अपराध करता है या निराश होकर आत्महत्या कर बैठ़ता है।

चाणक्य बुद्धि का रहस्य

❖ जैन धर्म के 'धन्य चरित्र' ग्रंथ के अंदर बुद्धिमान बनने के अनेक उपायों में एक उपाय यह बताया है : ''अनेक शास्त्रार्थ विलोकने च,'' अर्थात् जो व्यक्ति अनेक प्रकार के शास्त्र के अर्थों को पढ़ता हो अथवा जिसमें जीवन संबंधित महत्त्वपूर्ण बातों का संकलन हो ऐसी पुस्तकों को निरंतर पढ़ता हो उसकी बुद्धि बहुत ही तीव्र बनती है । स्कूलों के अंदर जो पढ़ाया जाता हैं उसमें से जीवन में कितना उपयोग में आएगा ? यह एक बहुत बड़ा सवाल है । ऐसी पुस्तकों को रटने से बुद्धिमत्ता का विकास कैसे हो सकता है ? परीक्षा में पास होने के लिये स्कूलों द्वारा निर्धारित पुस्तकों को रटने मात्र से नहीं परंतु जीवनोपयोगी सैकड़ों पुस्तकों के पठन-पाठन, चिंतन-मनन से ही व्यक्ति चाणक्य या बीरबल जैसा बुद्धिमान बन सकता है ।

विकास का आधार = वातावरण

❖ कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में मिलने वाले कुल ज्ञान का 20-25% ज्ञान ही स्कूल से प्राप्त करता है । बाकी तो वह उसके आसपास के वातावरण से ही सीखता है । स्कूलों का शिक्षण चाहे जैसा भी क्यों न हो पर उसका अंतिम परिणाम अच्छा नहीं है क्योंकि जब तक आसपास का वातावरण ही भ्रष्ट हो, मित्रवर्ग गंदी आदतें सिखाते हो, बेशरमी की हद को पार

करने वाले वर्तमान के एक्टर तथा क्रिकेटर ही जीवन के आदर्श हो, घर में कलह का वातावरण हो, खुद की समस्याओं को सुलझाने वाला कोई दिखता न हो, तब तक वह आगे कैसे बढ़ सकता है ? इसलिये व्यक्ति को वास्तव में अगर शिक्षित करना हो तो उसका जीवन दुर्गुणों से भ्रष्ट न बने ऐसे वातावरण में ही उसे रखना चाहिए। वर्तमान में तो मात्र सोशियल मीडिया - T.V. आदि पर दिखाई जाने वाली गंदगी तथा लड़के-लड़कियों को साथ में बैठाकर दिया जाने वाला सहशिक्षण ही व्यक्ति को मार्गभ्रष्ट करने के लिये पर्याप्त है।

शक्तिमान बनने की कला

❖ संपूर्ण शारीरिक-मानसिक एवं बौद्धिक विकास के लिये भारतीय संस्कृति में 25 वर्ष की उम्र तक ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक बताया गया हैं। पढ़ाई की उम्र में अगर बॉयफ्रेंड या गर्लफ्रेंड के परिचय का रस लग जाए तो उसकी पढ़ाई

बरबाद होने की संभावना पूरी तरह बढ़ जाती है और पढ़ाई की उम्र में जो सही ढंग से पढ़ न सका वह जीवन में कभी आगे नहीं बढ़ सकता । पुरुष रूपी बारुद के लिये स्त्री चिनगारी का काम करती है, इसलिये व्यक्ति को अगर आगे बढ़ाना हो तो जहाँ लड़के-लड़कियाँ एक साथ पढ़ते हो ऐसे स्थानों से उसे दूर ही रखना चाहिये । मित्रों का चयन करने में सावधान न बने तो जीवन समाप्त होने में देर नहीं लगती ।

डरपोक प्रजा का जिम्मेदार वर्तमान शिक्षण

❖ 8 वर्ष की उम्र के बाद में ही बालक के अंदर से भय कम होता है तथा वह माँ-बाप के बिना भी अकेला रह सके, ऐसी योग्यता प्राप्त करता है । जैन ग्रंथों में भी दीक्षा ग्रहण तथा विद्याग्रहण हेतु गुरुकुल प्रस्थान का समय 8 वर्ष का बताया गया है । 8 वर्ष के पहले ही उसे घर से बाहर स्कूलों में पढ़ने भेज दिया जाए तो उसमें एक प्रकार का डर घर कर जाता है जो बाद में जीवनभर नहीं निकलता । इसलिये 8 वर्ष की उम्र तक उसे घर में ही मौलिक तथा नैतिक अध्ययन द्वारा मौखिक रुप से प्राथमिक ज्ञान देना चाहिये । लेखन की शुरूआत आठ की उम्र के बाद ही होनी चाहिये । जब से 2-3 साल की उम्र में पढ़ाई के नाम पर बच्चों को घर से बाहर भेजने की शुरूआत हुई है, पढ़ाइ का दबाव, रिजल्ट में टॉप पर टिके रहने का प्रेशर, ट्युशन-होमवर्क-प्रोजेक्ट्स आदि

का भार बढ़ाया गया है तब से विद्यार्थीओं में आत्महत्या का प्रमाण बहुत ही बढ़ गया है, यह प्रत्यक्ष दिख रहा है ।

घोडे को गधा बनाने की ट्रेनिंग = मातृभाषा रहित शिक्षण

❖ कोयल को अगर कौए की बोली सिखाई जाय तो वह कभी इस कार्य मे सफल नहीं हो सकेगी । उसी प्रकार जो व्यक्ति जिस भाषा में विचार करता हो उसी भाषा में ही प्राथमिक ज्ञान प्राप्त करे तो ही वह तीव्रता से ज्ञान प्राप्त कर सकता है । समय कम है तथा काम ज्यादा है इसलिये जिसमें ज्यादा समय लगे ऐसे काम नहीं करने चाहिये । जैसे हम अखबार अपनी मातृभाषा में ही पढ़ते है । मातृभाषा में पढ़ने वाला किसी भी विषय को तुरंत ही ग्रहण कर सकता है तथा आसानी से याद रख सकता है । एक बार जो खुद की मातृभाषा में पारंगत बन जाए वह आगे जाकर विश्व की किसी भी भाषा को अल्पकाल में सीख सकता है । इस शोर्टकट को छोड़कर जो लोग शुरूआत से ही अंग्रेजी आदि पराई भाषा में पढ़ने का लोंगकट पकड़ रहे है उनकी हालत भविष्य में धोबी के उस कुत्ते जैसी होती है, जो ना तो घर के काम आता है, ना ही घाट के । वर्तमान में जर्मनी-जापान आदि अनेक देश शिखर पर है उसका एक मुख्य कारण यह है कि वहाँ पर मातृभाषा में ही पढ़ाया जाता है।

भारत में महाभारत का जनक वर्तमान शिक्षण

❖ हजारों को नौकरी पर रखकर करोड़ों को बेरोजगार बनाने वाली मल्टीनेशनल कम्पनियों का काम कर सके ऐसे कर्मचारियों को पैदा करने की फैक्ट्री यानी वर्तमान शिक्षण पद्धति। उसमें भी 100 में से 10-20 को ही काम मिलता है, बाकी 80 तो बेकार ही बैठे रहते है। पिछले दिनों 16-9-2015 को अखबारों में एक खबर छपी... चपरासी के 368 सीटों के लिये 23 लाख आवेदन। इन में 255 Ph.D., 2 लाख से ज्यादा B.Tech., लाखों पोस्ट ग्रेज्युएट व ग्रेज्युएट। 15-20 साल तक पढ़ने के बाद और लाखों रुपये खर्च करने के बाद भी दो टाईम की रोटी कैसे प्राप्त करे यह अगर प्रश्नचिन्ह हो तथा जिन्हें काम-धंधा मिल जाए उन शिक्षितों से निर्मित सोफ्टवेयर-मशीन-रोबोट्स आदि के द्वारा करोड़ों लोगों के

पेट पर लात पडती हो तथा जो बेरोजगार बनेंगे वे खुद का पेट भरने के लिये अनेक प्रकार के अपराध करेंगे ही, जिसके फलस्वरूप भारत में रोज-रोज महाभारत होता ही रहेगा । तो इसका मतलब यह हुआ कि यह शिक्षण पद्धति मूल से ही गलत है और इसमें अपने बच्चों को भेजना यानी खुद के पैर पर तथा समाज के पेट पर कुल्हाड़ी मारने के समान है ।

इन्सान को शैतान बनाने वाला वर्तमान शिक्षण

❖ T.V., लेपटोप - मोबाइल - वाईफाई आदि वर्तमान के जितने भी आधुनिक साधन है उनमें से शरीर के लिये अत्यंत हानिकारक किरणें तथा रेडीयेशन निकलते है, जिससे नपुंसकता तथा कैंसर जैसे भयानक रोग हो सकते है । इन साधनों में अच्छी बातें कम तथा न देखने जैसे हिंसक तथा अश्लीलता से भरपूर खराब दृश्य ही ज्यादा आते है । बच्चें

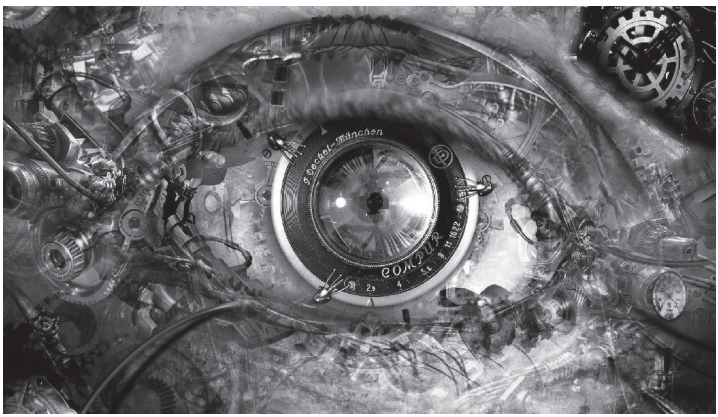

बिगड़ न जाए इसलिये हम रेडलाइट एरिये तथा कत्लखाने वाले क्षेत्रों में रहने तो नहीं जाते बल्कि गुजरते भी नहीं । तो जिसके अंदर न देखने जैसा भी देखा जा सके तथा हजारों बार ऐसे हिंसक तथा अश्लील दृश्यों को देखने के बाद अच्छे से अच्छा संत भी शैतान बन जाए, ऐसे खतरनाक साधनों को हम अपने बच्चों के हाथ में कैसे दे सकते हैं ? स्कूलों में शिक्षा के नाम पर छोटी उम्र में ही इन साधनों को बच्चों के हाथ में पकड़ा दिया जाता हैं । इनके द्वारा बच्चों के शरीर तथा दृष्टि पर भयंकर असर पड़ता है तथा उनके मन-मस्तिष्क पर गंदे विचारों का एक मायाजाल बन जाता है जो उन्हें आत्महत्या, बलात्कार, हिंसा, चोरी, व्यसन आदि गलत कार्यों को करने के लिये उकसाता है । इससे घर के धन का नाश व आगे तक की पीढियों पर बहुत ही नकारात्मक असर पड़ता है । बच्चों को अगर स्वस्थ, सज्जन तथा बुद्धिमान बनाना हो तो उन्हें T.V. तथा इन्टरनेट से युक्त इन आधुनिक साधनों से दूर ही रखना चाहिये। एप्पल कंपनी के स्थापक स्टीव जोब्स ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि उसने अपने बच्चों के हाथ में इन विनाशक साधनों को कभी नहीं आने दिया । गुगल-फेसबुक-व्होट्सेप द्वारा समग्र विश्व को इन्टरनेट का व्यसन लगाने वाले, सिलिकॉन वैली (अमेरिका) में रहने वाले 80% बड़े-बड़े सोफ्टवेयर इंजिनियर खुद अपने बच्चों को ऐसी स्कूलों में पढ़ाते हैं जहाँ 12 वर्ष की उम्र तक मोबाईल आदि आधुनिक साधन देखने को भी नहीं मिलतें ।

अशक्त प्रजा का उत्पादक वर्तमान शिक्षण

❖ वर्तमान शिक्षण को व्यक्ति जैसे-जैसे ग्रहण करता है वैसे-वैसे वह मशीनों का गुलाम बनता जाता हैं । उसका शारीरिक श्रम घटता जाता हैं, फलस्वरूप वह आलसी बन जाता हैं । सब-कुछ मशीनों के द्वारा करने से उसका दिमाग भी धीरे-धीरे अपनी क्षमता खो बैठ़ता है तथा पर्याप्त श्रम न होने के कारण छोटी उम्र में ही शरीर अनेक रोगों का धाम बन जाता है । जो शरीर से ही सक्षम न हो ऐसा व्यक्ति सफलता की उँचाईयों को कैसे छू सकेगा ?

अशांति तथा अपराध का मूल

❖ मशीनों के द्वारा किसी भी कार्य को शीघ्र ही पूर्ण किया जा सकता है । मशीनों की इस शीघ्र गति के कारण मानव भी

शीघ्रता का आदी बन जाता है । वह किसी कार्य में विलंब सहन नहीं कर सकता है तथा किसी भी प्रसंग में तुरंत ही अपना नियंत्रण खो बैठ़ता है जिसके परिणाम स्वरूप जब-जब उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी होता है तब-तब वह शांति से इंतजार करने के बदले मरने-मारने पर उतर जाता है । मशीनों के उपयोग द्वारा शिक्षण जितना हाईटेक बनेगा, मनुष्य भी अंदर से उतना ही अशांत तथा अपराधिक गतिविधियों से पूर्ण बनेगा ।

समस्याओं का सर्जक वर्तमान शिक्षण

❖ बड़ा होने के बाद जो खुद की माँ को ही भूल जाए उसे लोग कपूत कहते है । वर्तमान के मैकॉले शिक्षण की यह विशेषता है कि व्यक्ति जैसे-जैसे इसमें आगे बढ़ता है, वैसे-वैसे उसमें खुद के देश, खुद की मातृभाषा, खुद की संस्कृति, खुद का धर्म, खुद की प्राचीन परंपरा, खुद के शिक्षक तथा खुद के परिवार आदि के प्रति धिक्कार का भाव बढ़ता जाता है, तो जिस शिक्षण के द्वारा व्यक्ति खुद के मूल से ही अलग पड़ जाता हो तथा मात्र और मात्र परदेशी विचार तथा परदेशी जीवनशैली का गुलाम बनकर समाज के अंदर सैंकडों समस्याओं का सर्जक बनता हो ऐसे शिक्षण को योग्य कैसे कहा जा सकता है ?

'गरीबी, भ्रष्टाचार, अव्यवस्थित शिक्षणतंत्र आदि के कारण 80% से ज्यादा लोग आज भी इस शिक्षण को पूरी तरह ग्रहण

नहीं कर सकते', यह बात देश के लिये फायदेमंद ही हैं क्योंकि जब यह मेकॉले शिक्षण प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँच जाएगा तब देश की हालत क्या होगी यह अकल्पनीय है ।

सुसंस्कारों का सर्वनाशक वर्तमान शिक्षण

❖ वर्तमान की शिक्षा का लक्ष्य मात्र और मात्र कॅरियर का निर्माण है, जबकि दुनिया में पूजा उनकी ही होती है जिनका केरेक्टर पवित्र हो, (उदा. शिवाजी महाराजा, सुभाषचंद्र बोस) तथा जिसका केरेक्टर सही नहीं है उसका कॅरियर भी कुछ ही समय में समाप्त हो जाता है, (उदा.रावण, दुर्योधन) इसलिये शिक्षण ऐसा होना चाहिये कि जिसको लेने के बाद व्यक्ति के अंदर ज्यादा से ज्यादा देशभक्ति, मानवता, सज्जनता तथा परोपकार करने की भावना प्रगट हो । जबकि वर्तमान शिक्षण लेने वाले प्रायः संग्रहखोरी तथा विदेश भाग जाने में ही खुद का गौरव समझते है । नौकर-पत्नी-पुत्र-मित्र-ग्राहक आदि हमारे संपर्क में आने वाले सभी व्यक्ति सुसंस्कारी, विनयी-विवेकी-सत्यवादी ही होने चाहिये ऐसा आग्रह रखने वाले हम लोग हमारे आश्रितों को ऐसा शिक्षण कैसे दिला सकते है जिस शिक्षण यज्ञ में सद्‌गुणों की आहुति दी जा रही हो ? शिक्षा को जब तक परोपकारलक्षी नहीं बनाया जाएगा तथा शिक्षा से भी ज्यादा सुसंस्कारों को महत्त्व नहीं दिया जाएगा तब तक भारत को भगवान भी नहीं बचा सकेंगे ।

प्रकृति के प्राण को हरने वाला वर्तमान शिक्षण

❖ जल-जमीन-वनस्पति आदि कुदरती साधनों के अत्यंत शोषण के कारण प्रकृति में सैकडों प्रकार की समस्याओं का निर्माण हुआ है । धन प्राप्त करने की अंधी दौड़ में व्यक्ति यह भूल जाता है कि उसे अगर जिंदा रहना हो तो प्रकृति के प्रत्येक तत्त्व को भी जिंदा रखना ही पड़ेगा । वर्तमान शिक्षण में एक ही बात सिखाई जाती है कि किसी भी प्रकार से धनवान बनो । उसके लिये चाहे भ्रष्टाचार करना पडे या किसी भी प्रकार का अनैतिक काम करना पड़े। वर्तमान की 90% समस्याओं का मूल कारण वर्तमान का अध्यात्म निरपेक्ष शिक्षण है इसलिये विश्व को अगर समस्या रहित बनाना हो तो शिक्षण ऐसा होना चाहिये कि जिसके फलस्वरूप 'जैन साधु' की तरह प्रत्येक व्यक्ति कम से कम साधनों के उपयोग द्वारा जीवन जीने की कला सीखे तथा जल-जमीन-वायु-वनस्पति-अग्नि, जीव-जंतु आदि प्रकृति के किसी भी तत्त्व को अनावश्यक परेशान न करे, तब ही वर्तमान की समस्त समस्याओं का अंत आएगा ।

बेरोजगारों का जनक वर्तमान शिक्षण

❖ व्यक्ति को जिस क्षेत्र में आगे बढ़ना हो उस क्षेत्र में जो एक्सपर्ट हो उनके पास जाकर सीखे तो ही वह उस क्षेत्र में मास्टर बन सकता है । वर्तमान में बेरोजगारी बढ़ती ही जा

रही है उसका एक महत्त्वपूर्ण कारण यह भी है कि उसे स्कूल की चार दीवारों के अंदर बैठ़ाकर ही पढ़ाया जा रहा है । जैसे तैरना सीखना हो तो पानी में कूदना ही पड़ता है, वैसे ही जिस काम में निपुणता प्राप्त करनी हो उस काम का अनुभव मात्र स्कूल मे बैठ़े रहने से कैसे मिल सकता है ? विदेश की कितनी ही स्कूलों में तो अब पढ़ना कम करवाकर सीधे काम करने की ही ट्रेनिंग दी जा रही है । वर्तमान में जितने भी लुहार, सुथार, किसान आदि मजदूर वर्ग है वे सभी अपना-अपना काम बंद कर दे तो ये डिग्री लेकर घूमने वाले खाने के लिये अनाज कहाँ से लाएँगे तथा ऑफिस के अभाव में कहाँ पर जाकर बैठेंगे ?

मौलिक प्रतिभा का विनाशक वर्तमान शिक्षण

❖ जितने भी नए रिसर्च हो रहे है और उन पर पेटेंट लिये जा रहे है वे ज्यादातर विदेशों में ही हो रहे है, ऐसा क्यों है ? शिक्षण के द्वारा व्यक्ति में वक्तृत्वकला, लेखन, साहित्य, छंद, हाजिर जवाबिता, कवित्व शक्ति, टेक्नोलॉजी आदि विविध प्रकार की सर्जनशक्ति एवं कलाकौशल्य का विकास होना चाहिए जबकि भारत में जो शिक्षण दिया जा रहा है उसके द्वारा व्यक्ति में कोई विशेषता उत्पन्न होती हो यह स्वप्न का विषय है । जहाँ पर जीवन को गलत दिशा में ले जाने वाले विषयों को रट्टा मारने की कला को ही सर्वस्व माना जाता हो वहाँ पर व्यक्ति में विविध प्रकार की सर्जनशक्ति के

विकास की आशा रखना, यह रेत में से तेल की आशा रखने तुल्य है । प्रत्येक व्यक्ति में कुछ मौलिक प्रतिभा होती है, वर्तमान की शिक्षा पद्धति उस मौलिक प्रतिभा को बाहर लाने के बदले समाप्त करने में कार्यरत हैं । इस शिक्षण के कारण विद्यार्थी एक रटने वाला तोता बनकर रह जाता है । जिसके फलस्वरुप कुए का मेंढक बनकर वह अपनी सीमित दुनिया में खुद की जिंदगी पूर्ण कर देता है ।

वर्तमान शिक्षण पद्धति = मात्र रोजगार प्रशिक्षण संस्था

❖ जिस काम में जिसको रुचि न हो उस काम को करने वाले तीव्र बुद्धिशाली व्यक्ति की अपेक्षा जिस काम में जिसको रुचि हो ऐसा मंदबुद्धि व्यक्ति उस तीव्र बुद्धिशाली व्यक्ति से दस गुना ज्यादा आगे बढ़ जाता है । शिक्षण ऐसा होना चाहिये कि जिसको ग्रहण करने हेतु विद्यार्थी के अंदर निरंतर उत्सुकता बनी रहनी चाहिये, जबकि वर्तमान का शिक्षण ऐसा है कि बच्चों को जब अवकाश मिलता है तब मानो वे जेल से छूटे हो ऐसा अहसास होता है । जो खुद के शिक्षण को एक बोझ समझता हो वह उस क्षेत्र में पारंगत कैसे बन सकता है ? वर्तमान की शिक्षण संस्थाओं को 'शिक्षण संस्था' कहने के बदले 'रोजगार प्रशिक्षण संस्था' कहना ज्यादा उचित लगता हैं, क्योंकि इनमें पढ़ने के बाद पैसा ही जीवन का लक्ष्य बन जाता है तथा व्यक्ति के अंदर अन्य कुछ पढ़ने की रुचि ही समाप्त हो जाती है ।

आत्महत्याओं का प्रेरक वर्तमान शिक्षण

❖ जब हमारा मन प्रसन्न होता है तब हाथ लिया हुआ कोई भी काम तुरंत पूरा हो जाता है । वर्तमान का शिक्षण लेने वाले निष्फल साबित होते जा रहे हैं उसका एक कारण यह भी है कि उन पर ऐसा शिक्षण थोपा जा रहा है जो उनके मन को टेंशन-डिप्रेशन में लेकर जा रहा है । जैसे वेकेशन में डांस, सिंगिंग, कराटे, म्युजिक आदि की क्लासेस करने बच्चे दौड़-दौड़कर जाते है, वैसे विद्यार्थीयों को अगर होशियार बनाना हो तो उन्हें ऐसा शिक्षण देना चाहिये जो उनके दैनिक जीवन में काम लगे तथा जिसे लेते समय उनका मन प्रसन्नता से तरबतर हो जाए अन्यथा विद्यार्थीयों की बढ़ती हुई आत्महत्याओं को रोकना असंभव बन जाएगा ।

बेरोजगारी का सरल उपाय

❖ टेक्नोलॉजी का उपयोग जितना बढ़ता जाएगा, बेरोजगारी उतनी ही ज्यादा बढ़ती जाएगी । भविष्य में बेरोजगारी को रोकना हो तो ऐसा शिक्षण देना चाहिये कि जिसमें टेक्नोलॉजी हस्तक्षेप कर ही न सके । जो मानवीय श्रम से ही संभव है ऐसे कार्यों में मास्टरी प्राप्त करने वाला कभी बेरोजगार नहीं बन सकता । वर्तमान की ज्यादातर सामग्रियाँ मिलावटी तथा केमिकल से निर्मित होती है, जो शरीर को भयंकर नुकसान पहुँचाती है । अगर शुद्ध तथा प्राकृतिक रीति से निर्मित

वस्तुओं का विक्रय किया जाए एवं बच्चों को सुसंस्कारी तथा प्रतिभाशाली बनाने का कोर्स करवाया जाए तो करोड़ों लोगों को आसानी से रोजगार मिल सकता है क्योंकि ऐसी वस्तुओं की तथा कोर्स की मांग पूरे विश्व में हैं।

भाग्यवान बनने का उपाय

❖ चाहे जितना बुद्धिशाली तथा परिश्रमी व्यक्ति क्यों न हो पर अगर नसीब अच्छा न हो तो वह पीछे रह जाता है तथा जिसका नसीब जोर मार रहा हो वह मंदबुद्धि तथा आलसी होते हुए भी आगे बढ़ जाता है। व्यक्ति को अगर सफल बनाना हो तो मात्र शिक्षण पर भार देने के बदले साथ-साथ में नसीब का भी महत्त्व समझाना चाहिये तथा उसे ऐसा शिक्षण देना चाहिये कि जिसके द्वारा उसका नसीब भी कुछ

ही समय में खिल उठे। हमारे प्राचीन जैन ग्रंथों में नसीब को जोरदार बनाने के सैकड़ों उपाय बताए गए है, उनका भी अध्ययन करवाया जाए, ऐसा शिक्षण होना चाहिये ।

दरिद्रता का सर्जक वर्तमान शिक्षण

❖ वर्तमान में प्रतिवर्ष 'करोड़पति कितने बढ़े?' वह बताया जाता है, पर 'गरीब व्यक्ति भी करोड़पति कैसे बने ?' वह नहीं सिखाया जाता। वर्तमान शिक्षण तथा वर्तमान व्यवस्था गरीब तथा अमीरों के बीच अंतर बढ़ाती जा रही है। गरीब ज्यादा से ज्यादा गरीब बनता जा रहा है तथा अमीर ज्यादा से ज्यादा अमीर बनता जा रहा है। जो धन समाज के प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु काम में आना चाहिये, वह मात्र अमीरों की तिजोरियों में जमा होता जा रहा है। इस अव्यवस्था को तोड़ना हो तो वर्तमान के स्वार्थमूलक शिक्षण का विसर्जन कर परोपकार की भावना को बढ़ाने वाले तथा बुद्धि को धारदार बनाने वाले संस्कृत भाषा आधारित प्राचीन काल के भारतीय शिक्षण को बढ़ावा देना चाहिये, जिसे सीखने के लिये विदेश से प्रतिवर्ष हजारों विद्यार्थी हमारे नालंदा एवं तक्षशिला आदि के विश्वविद्यालयों में आते थे। अब तो जर्मनी आदि अनेक देशों की शताधिक युनिवर्सिटी-स्कूल आदि में हमारे संस्कृत ग्रंथों को शिक्षण का आवश्यक अंग बना दिया गया है ।

मात्र पुरुषों को लक्ष्य में रखकर बनाया हुआ वर्तमान शिक्षण

❖ पुरुषों तथा स्त्रियों की शारीरिक रचना अलग-अलग है । स्वभाव अलग-अलग है । पुरुष शौर्य प्रधान होता है, तो स्त्री वात्सल्य स्वरूपा होती है । दोनों के कार्य भी अलग-अलग है । पुरुषों के लिए व्यवसाय द्वारा धन अर्जन का कार्य मुख्य होता है, जबकि स्त्रियों के लिए घर-परिवार की व्यवस्था तथा बच्चों की देखभाल करना मुख्य कार्य होता है । स्त्री भले नौकरी करने चली भी जाए पर घर तो उसे ही संभालना पड़ता है, इसलिये पुरुष और स्त्री इन दोनों का शिक्षण भी अलग-अलग ही होना चाहिये । वर्तमान शिक्षण मात्र पुरुषों को लक्ष्य में रखकर बनाया गया है । स्त्रियों को भी यहीं शिक्षण दिलाना यह हाथी को घोडे की तरह दौड़ाने जैसी बात है । वर्तमान में तलाक की समस्या बहुत बढ़ गई है उसका एक मुख्य कारण यह भी हैं कि स्त्रियों को बहुत कुछ सिखाया जाता है परंतु खुद का घर कैसे संभालना ? रसोई कैसे बनानी ? तथा खुद के परिवारजनों को कैसे प्रसन्न रखना ? यह सिखाया ही नहीं जाता । सब के सब नौकरी करने चले जाएंगे तो घर का तथा बच्चों का ध्यान कौन रखेगा ?

'स्त्री स्वातंत्र्य' अर्थात् 'स्त्री सर्वनाश'

❖ वास्तव में तो मल्टीनेशनल कम्पनियों को सस्ते कर्मचारी उपलब्ध करवाने हेतु ही 'स्त्री स्वातंत्र्य' के नाम से स्त्रियों को

भी पुरुषों की तरह ही शिक्षण, कला, जीवनशैली तथा वस्त्र परिधान आदि का अभ्यास करवाया जा रहा है । 130 करोड की जनता में 50 करोड स्त्रियाँ अगर नौकरी करने लग जाए तो करोड़ों पुरुषों की नौकरी खतरे में पड़ जाए तथा जो पुरुष नौकरी करना चाहे उनके पास से भी सस्ते में काम करवाया जा सके एवं नौकरी के नाम से अकेली घर से बाहर निकली हुई मजबूर स्त्री के शरीर को आसानी से भ्रष्ट किया जा सके और ऐसी भ्रष्ट स्त्रियों के गर्भ से भारत में महापुरुष के अवतार की संभावना ही खत्म हो जाए यहीं षड़यंत्र रचा जा रहा है । मूल्यवान आभुषणों को भी तिजोरी में ही रखना पडता हैं तो आभूषणों से भी ज्यादा मूल्यवान हमारे घर की बहनों को नौकरी करने तथा ट्युशन-कॉलेज आदि के बहाने

अकेली घर से बाहर कैसे भेजा जा सकता है ? रूखी रोटी खाना पर घर की इज्जत मत लुटवाना । अपने घर की महारानी को किसी के ऑफिस की नौकरानी मत बनाना ।

समझदारी के बदले स्मरण शक्ति को महत्त्व देने वाला वर्तमान शिक्षण

❖ वर्तमान के शिक्षण में वे लोग ही आगे बढ़ रहे है जिनके पास तीव्र स्मरणशक्ति है, पर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने हेतु स्मरणशक्ति से भी ज्यादा समझदारी की जरूरत पड़ती है। बुद्धि को तीव्र बनाकर जीवन के प्रत्येक प्रश्न को हल करना सिखा सके तथा चाणक्य-बीरबल जैसे बुद्धिशाली व्यक्तिओं का निर्माण कर सके ऐसी पुस्तकों का वर्तमान के मैकॉले शिक्षण में संपूर्णतः अभाव है । वर्तमान शिक्षण पद्धति में मात्र स्मरणशक्ति की परीक्षा होती है, समझदारी की नहीं । जिसके पास समझदारी न हो वह चाहे जितना भी बड़ा विद्वान क्यों न बन जाए तो भी क्या काम का ?

युवावर्ग का पतन करने वाला वर्तमान शिक्षण

❖ 'सा विद्या या विमुक्तये', अर्थात् 'जो समस्त बाह्य तथा अभ्यंतर पराधीनता से मुक्ति दिलाए उसे ही वास्तव में विद्या कहते है ।' विद्या तो ऐसी होनी चाहिये कि जिसको प्राप्त

करने के बाद किसी भी वस्तु या व्यक्ति के बिना भी खुद के अंदर से ही प्रतिक्षण आनंद का अनुभव होता रहे, खुश रहने के लिये किसी भी वस्तु या व्यक्ति की अपेक्षा ही न रहे, चाहे कैसी भी विकट परिस्थिति में कभी कोई गलत कदम उठ़ाने के विचार भी न आए । अत्यंत प्रतिकूल परिस्थिति में भी प्रतिक्षण खुद के अंदर से ही आनंद कैसे प्राप्त किया जाए यह बात आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने वाला बच्चा-बच्चा भी जानता है परंतु इस बात का वर्तमान शिक्षण में कोई उल्लेख ही नहीं है । जिसके फलस्वरूप आनंद प्राप्त करने के लिये आज का युवावर्ग नशीली दवाइयाँ, मद्यपान, रेगिंग, स्मोकिंग, सेक्स, सोशियल मीड़िया आदि गलत आदतों का गुलाम बन जाता है और अंत में अपने जीवन को तहस-नहस कर देता है ।

विद्या प्राप्ति की मूल पद्धति

❖ स्कूल जाने के बाद भी पास होने के लिये ट्यूशन क्लासेस में जाना पड़ता है । इस बात से सिद्ध होता है कि व्यक्ति मात्र स्कूल के द्वारा शिक्षित नहीं बन सकता । जैसे ड्रायविंग के समय बाजु में बैठ़कर कोई हमें सिखाए तो ही हम अच्छे से सीख सकते हैं पर एक साथ में 50 लोगों को 1 ही व्यक्ति ड्रायविंग सिखाए तो क्या होगा ? वैसे जो व्यक्ति 2-5 के समूह में शिक्षा ग्रहण करे, न पता चले तो पूछे, पूरा समाधान प्राप्त करे तथा पढ़ने के बाद दूसरों को भी पढ़ाए तब जाकर ही कोई भी विद्या संपूर्णतः आत्मसात् होती है । जबकि स्कूलों के अंदर 50-60 बच्चों को एक साथ पढ़ाया जाता है । उस समय सबको एक ही साथ समझ में कैसे आ सकता है ? इसलिये ही भारतीय प्राचीन शिक्षा प्रणाली में पढ़ने के साथ-साथ खुद से नीचे वाले को पढ़ाना भी पड़ता था । जिससे उपर वालों पर बोझ कम रहे, अन्य को पढ़ाने के कारण खुद को भी पूरी तरह समझ में आए तथा नीचे वालों को भी संतोष मिले । क्या वर्तमान स्कूलों में यह प्रणाली संभव है ?

धोखेबाजों का जन्मदाता वर्तमान शिक्षण

❖ परीक्षा के समय C.C.T.V. कैमरा लगाना पड़ता है इसका मतलब यह हुआ कि बच्चे के दिमाग में मात्र पास होने का ही लक्ष्य है चाहे उसके लिये नकल करनी पड़े या कुछ भी

करना पड़े । ऐसे गलत संस्कार लेकर बाहर निकलने वाला व्यक्ति भविष्य में दूसरों का तथा अपने आत्मीयजनों का वफादार कैसे रह सकता है ? तथा अपनी पीढी को भी आगे अच्छे संस्कार कैसे दे सकता हैं ? और पंद्रह-बीस साल तक नकल से पास होने वाले व्यक्ति के सामने जब जीवन के उलझे हुए प्रश्न आकर खड़े होंगे तब वह किसकी नकल मारेगा ? वास्तव में तो जिसमें अकल कम होती है वो ही दूसरों की नकल करता हैं । समस्त विश्व को मार्गदर्शन दे सके ऐसे 'चाणक्य नीति' जैसे सैकडों ग्रंथ जब हमारे पास उपलब्ध है तब पश्चिमी शिक्षण को लेने की क्या जरूरत हैं ? हम ऐसा कुछ क्यों नहीं कर सकते कि दुनिया हमारी नकल करें ?

सामाजिक Slow Poison

❖ **'A Sound Mind in A Sound Body'**, स्वस्थ शरीर में ही बुद्धि का संपूर्ण विकास होता हैं । वर्तमान में हमें जो भी भोजन खिलाया जा रहा है वह प्रायः मिलावटी, केमिकल से निर्मित खाद एवं रसायनिक जंतुनाशकों के द्वारा विकसित किया हुआ है । जो शरीर में जाने के बाद **'slow poison'** का काम करता है तथा छोटी उम्र में ही केंसर जैसे महारोगों का कारण बनता है । तो जिस भोजन के द्वारा हमारा पूरा शरीर असाध्य रोगों का घर बनता हो ऐसे जहरीले भोजन के द्वारा हमारी बुद्धि तीक्ष्ण कैसे बन सकती है ? शिक्षण के लिये प्रतिवर्ष अरबों-खरबों रुपये का खर्च उठाया जा रहा है पर पढ़ने वाला ही समय से पहले मर जाए तो इस धन व्यय का क्या

मतलब ? व्यक्ति के लिये पहले क्या जरूरी हैं ? शिक्षण या स्वास्थ्य ?

बौद्धिक तथा आर्थिक रूप से सफल होना हो तो...

❖ वर्तमान शिक्षण अगर वास्तव में लाभप्रद होता तो स्कूल-कॉलेज-Ph.D. आदि क्रमशः उच्चतर शिक्षण ग्रहण करने वालों की संख्या क्रमशः घटती क्यों जाती है ? करोड़ों लोग इस शिक्षण के उच्च स्तर तक पहुँचने के पहले ही ऐसे शिक्षण को क्यों छोड़ देते है ? तथा जो डिग्रियाँ लेकर बैठे हुए हैं उनमें भी ज्यादातर बेरोजगार क्यों हैं ? यानी कि जितना जरूरी हो उतना पढ़ना-लिखना आने के बाद वर्तमान शिक्षण को जो जितना जल्दी छोड़ दे तथा जो बुद्धि को तीक्ष्ण बना सके एवं आसानी से रोजगार दिला सके ऐसे अन्य कोई महत्त्वपूर्ण कार्य में लग जाए तो उसकी बौद्धिक-आर्थिक सफलता की संभावना उतनी ज्यादा है क्योंकि

वर्तमान में जो कोर्स करवाया जा रहा है वह सफलता दिलाने के लिये पर्याप्त नहीं है । सफल बनने के लिये प्रत्येक कार्य को फिर से ही सिखना पडता है ।

आजीवन खर्चा-पानी निकालने का अनुठा उपाय

❖ वर्तमान शिक्षण को पूर्ण करने तथा डिग्री प्राप्त करने में जितना धन खर्च होता है उतना धन अगर शुरूआत से बैंक में जमा करवा दिया जाय तो उसके ब्याज से आजीवन आराम से खर्चा-पानी निकल सकता है ।

अनुपयोगी मनुष्यों का उत्पादक वर्तमान शिक्षण

❖ भारत में अशिक्षित बेरोजगार से भी शिक्षित बेरोजगारों की संख्या ज्यादा है । अर्थात् जो जितना ज्यादा पढ़ा-लिखा, वो समाज एवं परिवार के लिये उतना कम उपयोगी क्योंकि जो कम पढ़ा-लिखा हैं उसे तो कोई भी काम करने में शरम नहीं आती तथा जो ज्यादा पढ़ा-लिखा है वह सामान्य काम करने में शरमाता है अतः ऊँचा काम न मिले तब तक बेकार ही बैठा रहता है । जबकि वास्तविकता ऐसी है कि जो खुद के छोटे काम को भी रुचिपूर्वक करे तो वह क्रमशः कम समय में ही बड़ा बन जाता है । (उदा. भजिया तलने वाले धीरुभाई अंबाणी)

रोगिष्ट समाज का सर्जक वर्तमान शिक्षण

❖ टेंशन-डिप्रेशन-अनिद्रा-ब्लडप्रेशर-एसिडिटी-स्थूलता-संधिवात-मानसिक रोग आदि अनेक प्रकार के रोग भी शिक्षित समाज में ही ज्यादा है । ये सब रोग कम पढ़े-लिखे तथा मजदूरी करने वाले लोगों में शायद ही देखने मिलेंगे ।

साक्षरों के बदले राक्षसों को बढ़ाने वाला वर्तमान शिक्षण

❖ स्त्रीभ्रूण हत्या, आत्महत्या, बलात्कार तथा सामाजिक अपराधों का प्रमाण भी शिक्षित वर्ग में ही ज्यादा है । केरल सबसे ज्यादा शिक्षित राज्य है तो सबसे ज्यादा अपराध भी वहाँ पर ही होते है । क्या शिक्षा का यही फल है ? शिक्षा के द्वारा हम साक्षरों को बढ़ा रहे है या राक्षसों को ?

Out of date वर्तमान शिक्षण

❖ वर्तमान शिक्षण लेकर व्यक्ति जब बाहर निकलता है तब तक तो टेक्नोलॉजी १० वर्ष आगे बढ़ जाती है । जिससे उसका लिया हुआ शिक्षण बहुत बार व्यर्थ साबित होता है । शिक्षण ऐसा होना चाहिए जो व्यक्ति की बुद्धि को जमाने से 50 वर्ष एडवांस बनाएँ, जीवन के प्रत्येक समय काम लगे तथा जीवन की प्रत्येक गुत्थी को सुलझा सके । ऐसा शिक्षण कहाँ है ?

भारत को वापस विश्वगुरु बनाना हो तो...

मात्र 'स्वच्छ भारत' नहीं परंतु 'सज्जन भारत'
मात्र 'पोलीयो मुक्त भारत' नहीं परंतु 'अश्लीलता मुक्त भारत'
मात्र 'मेक इन इंडिया' नहीं परंतु 'मेड इन भारत'
मात्र 'नोटबंधी' नहीं परंतु 'हिंसाबंधी'
मात्र 'केशलेस' नहीं परंतु 'एबोर्शनलेस'
मात्र 'सर्जिकल स्ट्राइक' नहीं परंतु 'स्पिरिच्युअल स्ट्राइक'
मात्र 'डिजिटल इंडिया' नहीं परंतु 'डिवाईन इंडिया '
मात्र 'अच्छे दिन' नहीं परंतु 'अच्छा शिक्षण'
का भी नारा लगाना पडेगा, तो ही अच्छे दिन आएंगे, अन्यथा प्रतिदिन हजारों लोगों को आत्महत्या करनी पड़े अथवा देश छोड़कर भागना पड़े ऐसे दिन अब दूर नहीं हैं ।

❖ जब तक अनात्मवाद युक्त वर्तमान के मैकॉले शिक्षण तथा सोशियल मीडिया द्वारा बताई जाने वाली गंदगी का संपूर्णतः बहिष्कार नहीं किया जाएगा तब तक चाहे जितनी सरकारे बदले, पर हिंसा, बलात्कार, चोरी, भ्रष्टाचार आदि भारत की सैकड़ों समस्याएँ अंशमात्र भी कम नहीं होगी क्योंकि व्यक्ति जैसा बार-बार देखता है वैसा ही दूसरों के साथ करता है ।

❖ आज तक बहुत सारे लोग किसी भी स्कूल में गए बिना मात्र विशिष्ट पुस्तकों के पठन से ही विश्व में महापुरुष के रूप में

प्रख्यात हुए हैं, (उदाः स्वामी विवेकानंद, अब्राहम लिंकन)। आप भी अगर विशिष्ट पुस्तकों को पढ़कर अपने जीवन को सार्थक करना चाहते हैं, जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में रास्ता निकाल सके ऐसी चाणक्यबुद्धि का स्वामी बनना चाहते हैं, प्रत्येक परिस्थिति में आनंदित रहने की कला सिखना चाहते हैं एवं देश-विदेश में जाकर 'भारतीय धर्म-संस्कृति के रहस्य', 'सुख-शांति-समृद्धि प्राप्त करने की वास्तविक कला' आदि विषयों पर सेमिनार रखना चाहते हैं तथा अपनी इस वक्तृत्व कला के द्वारा धन भी कमाना चाहते हैं तो इस हेतु 'जीवन उत्थान' नाम का कोर्स करने के लिए अवश्य संपर्क करें । मानव जीवन का सर्वतोमुखी विकास करने वाला वास्तविक शिक्षण कैसा होना चाहिये ? यह अगर आप जानना चाहते हो तो हमारी वेबसाईट तथा फेसबुक पेज/Fb ग्रुप bhagwan ka jawab के साथ अवश्य जुडे एवं उस पर रखे हुए हमारे सभी videos तथा लेख अवश्य देखें एवं पढ़ें ।

❖ वर्तमान शिक्षण की खामियों के संबंधित यहाँ पर जो बातें बताई गई है इनके अलावा भी अगर कोई बात आपको याद आए तो हमें अवश्य ई-मेल करवाएं । हम उसे इस पुस्तक में अवश्य स्थान देंगे तथा इस पुस्तक को पढ़ने के बाद आपकी कोई प्रतिक्रिया हो या आपने कोई विशिष्ट निर्णय लिया हो तो वह भी हमें अवश्य बतलाएं ।

संपर्क : हीर C/o. सौमिल - Whatsapp no.+ 91 7383254697
ई-मेल - bhagwankajawaab@gmail.com
वेबसाईट - www.bhagwankajawab.com

अगर आप भारत को समस्त समस्याओं से मुक्त बनाना चाहते हैं तो घर-घर तथा प्रत्येक स्कूल-कॉलेज में इस पुस्तक का वितरण अवश्य करवाएं एवं अपने बच्चों को समझदार, सुसंस्कारी तथा आज्ञाकारी बनाना चाहते हैं तो कम से कम 15 दिन उन्हें हमारे संपर्क में अवश्य रखें ।

मुखवास : पागलखाने में तथा वर्तमान शिक्षण संस्थानों में ज्यादा अंतर नहीं हैं क्योंकि पागलखाने में प्रवेश के समय व्यक्ति पागल होता है तथा निकलते समय समझदार हो जाता है जबकि वर्तमान शिक्षण संस्थानों में प्रवेश के समय व्यक्ति समझदार होता हैं पर डिग्री लेकर निकलते समय ऐसा बन जाता है कि उसे क्या कहना यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है । पागल इसलिये नहीं कहा जा सकता हैं क्योंकि पागल लोग समाज तथा देश को तो नुकसान नहीं पहुँचाते जबकि ये डिग्रिधारी लोग तो प्रायः किसी को भी नहीं छोड़ते ।

● ● ●